पर्यावरण बनाम वनाग्नि सूखते जल स्रोत – कारण व समाधान

शम्भु प्रसाद भट्ट
'स्नेहिल'

पर्यावरणीय सन्तुलन बनाये रखने के लिए वनों एवं वन्यजीवों की सुरक्षा पर विशेष ध्यान देना परम आवश्यक है। क्योंकि वन मानव जीवन के वह अनन्यतम साथी हैं, जो कि प्राकृतिक-सुन्दरता के साथ-साथ पर्यावरणीय सन्तुलन एवं भू-स्थिरता बनाये रखने में अहम् भूमिका निभाते हैं और प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप में मनुष्य के जन्म से मृत्यु तक के शाश्वत् सहयोगी हैं। इसलिए सभ्य एवं आदर्श मानव समाज वही है, जो वनों के विकास एवं संरक्षण को अपना आवश्यक कर्तव्य समझता है।

सर्वभूतेषु चात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि।
समं पश्यन्नात्मयाजी स्वराज्य-मधिगच्छति।।

मनुस्मृति में कहा गया है कि सभी जनों को चराचर संसार के समस्त प्राणियों को अपने समान समझते हुए उनके रक्षण व पालन-पोषण को अपना कर्तव्य समझना चाहिए। इस नीति वाक्य को अपने जीवन में उतार कर प्रकृति में व्याप्त सम्पूर्ण वनस्पति-जीव जगत् के संरक्षण के साथ जलस्रोतों का अधिक से अधिक विकास करना हम सबका दायित्व है। प्रकृति में फैला यह वनस्पति-जीव जगत् हमारा पारिस्थितिकीय तन्त्र का प्रमुख भाग है। यत्र-तत्र जो कुछ भी व्याप्त है या जो कुछ दृष्टिगोचर हो रहा है, वह सब पारिस्थितिकीय पर्यावरण ही तो है। शाब्दिक दृष्टि से **'परितः आवरणम्' इति पर्यावरणम्, अर्थात् इस संसार में हमारे चारों ओर फैला हुआ यह सम्पूर्ण आवरण, जिसमें जगत् के चराचर समस्त तत्व विद्यमान हैं अर्थात् जिसमें इस भू-धरा की पूरी जैव-विविधता समाई हुई है, पर्यावरण के ही अन्तर्गत आते हैं।'** हमारे चारों ओर जो भी प्राकृतिक और मानव द्वारा बनाई गई व्यवस्थाएं विद्यमान हैं वे सब पर्यावरण के पहलू ही हैं। पर्यावरणीय वनस्पति-जन्तु जगत् वन के मुख्य अंग हैं। इस कारण पर्यावरणीय जानकारी के लिए वन को समझना अत्यन्त आवश्यक है।

वन शब्द की व्यापकता को देखते हुए इसे परिभाषित करना अत्यधिक कठिन है, फिर भी सूक्ष्म शब्दों में आंकलन करने का प्रयास मात्र है। वन की सूक्ष्म शब्दों में परिभाषा इस प्रकार है- **'सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त उस**

भू-भाग या क्षेत्र को वन कहते हैं, जिसमें नदी-नाले, पहाड़-चट्टान, पठार, मैदानी भाग के साथ मिट्टी-पत्थर-खनिज एवं जीव-जन्तु, विशाल हिंसक जानवर, आकर्षक-पशु और वृहत् स्तर तक फैले विभिन्न प्रजातियों के पेड़-पौधे (वनस्पति) विद्यमान हों।' परिभाषा की दृष्टि से वन वह अथाह एवं असीमित खजाना एवं भण्डार है, जिसका आज तक मानव ने पार नहीं पाया है, यह अनन्त है। जिसे संस्कृत भाषा में **'अरण्य'** कहा जाता है अर्थात् जिसमें जीवन भर रहने पर भी पूर्ण रमण (भ्रमण) नहीं किया जा सकता है।

पर्यावरणीय सन्तुलन बनाये रखने के लिए वनों एवं वन्यजीवों की सुरक्षा पर विशेष ध्यान देना परम आवश्यक है। क्योंकि वन मानव जीवन के वह अनन्यतम साथी हैं, जो कि प्राकृतिक-सुन्दरता के साथ-साथ पर्यावरणीय सन्तुलन एवं भू-स्थिरता बनाये रखने में अहम् भूमिका निभाते हैं और प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप में मनुष्य के जन्म से मृत्यु तक के शाश्वत् सहयोगी हैं। इसलिए सभ्य एवं आदर्श मानव समाज वही है, जो वनों के विकास एवं संरक्षण को अपना आवश्यक कर्तव्य समझता है।

वनाग्नि के प्रभाव से प्रभावित क्षेत्र में आग की तीव्रता के आधार पर वनस्पति-जन्तु जगत् को अनगिनत क्षति पहुंचती है। जिससे निरन्तर भूगर्भ में जल स्रोतों का विनाश हो रहा है, यही स्थिति रही तो, आगामी निकट समय में हमें जल के अभाव में जल बिन मछली की तरह तड़पने हेतु मजबूर होना पड़ेगा।

सुखदुःखयोश्च ग्रहणाछिन्नस्य च विरोहणात्।
जीव पश्यामि वृक्षाणामचैतन्यं न विद्यते।।

महाभारत के शान्ति पर्व में उल्लेख मिलता है कि सभी पेड़-पौधें सुख-दुःख का अनुभव करते हैं, कटे वृक्ष में पुनः नवांकुरण होने पर उसके सजीवता का प्रमाण मिलता है। इसलिए वृक्षों को किसी प्रकार की भी क्षति पहुंचाने का प्रयास कर प्राणी उत्पीड़न/हत्या के पाप का भागीदार नहीं बनना चाहिए। वन क्षेत्र के अन्तर्गत विचरण करने वाले वन्यप्राणियों का अवैध आखेट कर कुछ स्वार्थी एवं अय्यासी किस्म के मानवों द्वारा वन के सन्तुलन को बिगाड़ने से जंगल का राजा कहे जाने वाले सिंह/शेर को वन-अस्तित्व की रक्षार्थ मानवों से भिड़ने हेतु मजबूर होना पड़ता है।

विचलित कर प्रकृति को, आपदाओं का ज्वार बढ़ाया है।
वन्य जीवों का आखेट कर शेर को घर-गाँव बुलाया है।।

लेखक ने अपनी पुस्तक श्री कार्तिकेय-दर्शन में लिखा है कि प्रकृति स्वयं हमें सचेत कर कह रही है कि- हे मानव! अभी भी सम्भल जा, अभी मौका है, नहीं तो तुझे पछताने का अवसर भी नहीं मिल पायेगा। यदि मैंने भी तुम्हारे बेरूखेपन के बदले पूर्णतः प्रतिफल देने की ठान ली, तो फिर अनर्थ हो जायेगा, लेकिन क्या करें, मानव की विकास की अन्धी दौड़ ने तो उसकी सोचने, समझने व सुनने की शक्ति ही क्षीण कर दी है।

हे बेदर्द मानव! सम्भल जा।
अपनापन छोड़ कर हमें सताता है।
क्यों निर्भीक होकर वन में आग लगाता है।।
हे बेदर्द।।
प्रकृति के सब जीवों का अधिकार तूने छीना है।
वन में आग लगाके तूने सताई अपनी आत्मा है।। हे बेदर्द।।

हिमालयी क्षेत्र के अन्तर्गत धरातलीय हलचल का कारण यह भी है कि कुछ वर्षों से विकास के नाम पर निर्मित कल-कारखानों, यातायात आदि के साधनों से निकलने वाले भयानक गैस के प्रभाव एवं वन व

पर्यावरण बनाम वनाग्नि

सिविल क्षेत्रों में लगने वाली आग लपटों से प्रवाहित धुएं से वायुमण्डल धूमिल होता जा रहा है। इससे उसकी स्वच्छ वायु प्रदान करने की क्षमता का ह्रास होता जा रहा है, जिससे पृथ्वी के तापमान में निरन्तर वृद्धि हो रही है। तापमान की वृद्धि के कारण कुछ वर्षों से पहाड़ी क्षेत्रों के साथ हिमालय में भी हिमपात की औसतन मात्रा में समयानुकूल नहीं है और विभिन्न गैसों के प्रभाव से हिम पिघलने की दर बढ़ गई है। जिससे हिमालय में भी प्राकृतिकता की स्थिति विचलित हो रही है। ओजोन परत के क्षीण होने से सूर्य की पैराबेंगनी किरणें पृथ्वी पर अपना सीधा प्रभाव दिखाती हैं, जिसके प्रभाव से नेत्र व त्वचा सम्बन्धी बीमारियां होने की प्रबल सम्भावना रहती हैं। वनों की आग से हानिकारक गैसें बनती हैं, इनसे ग्रीन हाऊस प्रभाव बढ़ता है और पृथ्वी का तापमान बढ़ जाता है, जिससे ग्लोबल वार्मिंग प्रारम्भ हो जाता है, जो कि धरती को भयानक खतरा उत्पन्न करता हैं।

आग वनों की है दुश्मन, वन अग्नि का करें समापन।
आज राष्ट्र का लक्ष्य यही है, वृक्षों से हो स्वच्छ पर्यावरण।।

वनों में आग लगने के कारणों की ओर ध्यान दें तो ज्ञात होता है कि प्राकृतिक रूप से, मानवीय लापरवाही, अपने स्वार्थवश व शरारतवश इस प्रकार की घटनाएं घटित होती हैं। वन क्षेत्र में लगने वाली अग्नि तभी दावाग्नि कहलाती है, जब अनियन्त्रित रूप से उस में लगी या लगाई गई हो। भारतीय वन अधिनियम 1927 संशोधित 2001 की धारा 26(1) बी, सी तथा धारा 79 और वन्य जीव संरक्षण अधिनियम 1972 की धारा 09 सपठित 51 के तहत वनाग्नि के सम्बन्ध में किये गये किसी प्रकार के अपराध के लिए कड़े से कड़े दण्ड का प्राविधान रखा गया है।

हे इन्सान! हमारी भी सुनता जा।
हमे सता के, तू भी परेशान होता जा।।
हे मानव! तेरी इस करनी से, तपन धरती को होती तड़पता जीव है।
छोड़ दे काटना तू हम को, क्योंकि वन ही जल-जीवन की नींव है।।

वनाग्नि के प्रभाव से प्रभावित क्षेत्र में आग की तीव्रता के आधार पर वनस्पति-जन्तु जगत् को अनगिनत क्षति पहुंचती है। जिससे निरन्तर भूगर्भ में जल स्रोतों का विनाश हो रहा है, यही स्थिति रही तो, आगामी निकट समय में हमें जल के अभाव में जल बिन मछली की तरह तड़पने हेतु मजबूर होना पड़ेगा। वन एवं पर्यावरण के विकास व संरक्षण से ही जल की निरन्तरता बनाये रखी जा सकती है, जो कि सार्वभौम सत्य है। किसी भी प्राणी के जीवन को बनाये रखने के लिए विभिन्न प्राकृतिकताओं के अन्तर्गत जितना अधिक जल का महत्व है, उतना किसी भी अन्योन्य तत्व का नहीं है। अतः यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि- **'जल ही जीवन है, बिन जल जीवन निरीह है।'**

मानवों को प्रकृति की प्रतिकूलता विभिन्न प्रकार की घटनाओं/आपदाओं व असमय फैलने वाले रोगों के रूप में भोगनी पड़ती है। इसलिए हम सबको मिल कर इनकी रक्षा व विकास का संकल्प लेना चाहिए, तभी सब सुरक्षित जीवन जी सकते हैं।

जैव विविधता की यह चर्चा, पास-पड़ोस प्रकृति की रक्षा।
जल संरक्षण हो सबकी इच्छा, काम यही है सबसे अच्छा।।

संपर्क करें :
शम्भु प्रसाद भट्ट 'स्नेहिल',
स्नेहिल साहित्य सदन,
निकटः पराग दुग्ध डेरी, उफल्डा,
(श्रीनगर), जिला- पौड़ी,
उत्तराखण्ड, 246174
मो.नं. 9760370593